पाठ - 7
शोक भरा साल

الدرس السابع - هندي
عام الحزن

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा अबू तालिब के जिस्म के अलग–अलग अगा में सख्त बीमारी पैदा हो गयी और वे बिस्तर पर पड़ गए। जब वे मौत की सख्तियों को झेल रहे थे और उनके पास बहुत कम समय बचा था, उस समय रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके बिस्तर पर सर के पास इस उम्मीद में बैठे थे कि वे मौत से पहले **"लाइलाह इल्लल्लाह** का इक़रार कर लें, लेकिन उनके पास बैठे हुए उनके बुरे साथी जिनमें अबू जहल भी था, ने ऐसा करने से मना किया। वे लोग कह रहे थे कि क्या तुम अपने बाप दादाओं के दीन को छोड़ दोगे? क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के दीन से मुंह मोड़ लोगे? ये लोग बराबर यही बात कहते रहे, यहां तक कि उनका इन्तिक़ाल शिर्क पर हो गया। तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने चचा के तअल्लुक़ से दोहरा ग़म हुआ, क्योंकि वे कुफ़्र की हालत में दुनिया से रुख्सत हुए। अबू तालिब की वफ़ात के लगभग दो महीने बाद खदीजा रजियल्लाहु अन्हाइस दुनिया से कूच कर गयीं, जिन का रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत ही ज़्यादा दुख व पीड़ा हुई और आपके चचा अबू तालिब और आपकी पत्नी खदीजा रजियल्लाहु अन्हाके इन्तिक़ाल के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आपकी क़ौम की यातनाओं में बहुत ज़्यादा बढ़ौतरी हो गयी।

नबीए सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ताइफ़ में : कुरैशी बराबर सरकशी ज़ोर आज़माई और मुसलमानों को तकलीफ़ देने पर तैयार रहे तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ताइफ़ जाने के बारे में सोचा, इस उम्मीद से कि शायद अल्लाह तआला उन्हें इस्लाम लाने की हिदायत दे दे। ताइफ़ का सफ़र कोई मामुली बात नहीं थी इस वजह से कि ताइफ़ के ऊंचे.ऊंचे पहाड़ों की गोद में स्थित होने की वजह से रास्ता बड़ा ही कठिन है लेकिन ताइफ़ वालों का नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्वागत और आपकी दावत को ठुकरा देना बड़ा ही बुरा था। उन्होंने आपकी बात को नहीं सुना बल्कि आपको भगा दिया और आपके पीछे आवारा बच्चों को लगा दिया। उन बच्चों ने आपको पत्थरों से मारा, यहां तक कि आपकी दोनों ऐड़ियां खून से लत पत हो गयीं। अतएव मक्का की ओर वापसी के इरादे से लौट पड़े। उस समय आप हद दर्जा निराश, दुखी और पीड़ित थे। इस दौरान आपकी सेवा में जिबरईल अलैहिस्सलाम हाजिर हुए। उनके साथ पहाड़ों का फ़रिश्ता भी था। जिबरईल अलैहिस्सलाम ने आप से कहा कि अल्लाह ने पहाड़ों के फ़रिश्ते को आपकी सेवा में भेजा है ताकि आप जो चाहें इसे हुक्म दें। पहाड़ों के फ़रिश्ते ने कहाः "ऐ मुहम्मद! यदि आप चाहें तो मैं इन्हें दोनों पहाड़ों के बीच रख कर पीस दूं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "नहीं, मुझे उम्मीद है कि इनकी नस्ल में से ऐसे लोग पैदा होंगे जो केवल अल्लाह ही की इबादत करेंगे और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करेंगे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धैर्य और सब्र और अपनी क़ौम की तरफ़ से तकलीफ़ें झेलने के बावजूद उनसे प्यार व मुहब्बत का यह बहुत बड़ा नमूना है

चाँद के दो टुकड़े होने की घटना : मक्का के मुशरिक विभिन्न तरीक़ों से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बैर व वाद विवाद पर तैयार रहते थे। उनमें से एक यह था कि वे आपकी रिसालत के सबूत के लिए मोजिज़ात की मांग किया करते थे। उन्होंने इस बात की मांग कई बार की। एक बार उन लोगों ने आप से चाँद को दो टुकड़ा करने को कहा। आपने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह ने उनको दिखाने के लिए चाँद के दो टुकड़े करके दिखा दिए। कुरैश ने लम्बे समय तक इस चीज़ का मुशाहेदा किया, लेकिन वे ईमान से सरफ़राज़ नहीं हुए। उन्होंने यह कहना शुरु कर दिया कि मुहम्मद ने हमारे ऊपर जादू कर दिया था। एक व्यक्ति ने कहाः "यदि उसने तुम लोगों पर जादू कर दिया था तो वह सभी लोगों पर तो जादू कर नहीं सकता है। अतएव सफ़र से आने वालों का इन्तिज़ार करो। जब कुछ सफ़र करने वाले वापस आए और इस घटना के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, कि हां हमने इस चीज़ का मुशाहिदा किया था। इसके बाद भी कुरैश अपने कुफ़्र पर जमे रहे।